मुखद्दमा

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

अल हम्दु लिल्लाह वहदा वस्सलातु वस्सलाम अला मल्ला नबी बादा व अला इलाहा व असहाबु अज्मयीन, अम्मा बाद :

2013 ईस्वी में U K और FRANCE की यात्रा के समय मुझे विचार आया कि, 'अमन (PEACE)' पर एक पुस्तक लिखी जाए| अल्हम्दुलिल्लाह इस यात्रा में ही मैंने इस पुस्तक का आरम्भ कर दिया| इस विषय पर कुरआन की आयात और सहीह हदीस का संकलन भी आरम्भ किया| मेरी यह इच्छा थी कि, इस पुस्तक को तुरंत लोगों के सामने लाया जाए| अल्लाह ने इस प्रयत्न को सफल किया|

समाज में शांति की स्थापना के लिए हर देश में socio economic justice का होना आवश्यक है| सामाजिक अधिकार, आर्थिक अधिकार और न्याय- यह तीन विषय में जो देश प्रतिबध्धता दिखाते है, वही सफल देश कहे जाते है| इन्सान को रोटी, कपडा और मकान की आवश्यकता हर समय होती है और यह तीन चीज़, जहाँ उपलब्ध होते है, वहां शांति बनी रहती है|

इस्लाम धर्म इन विषयो में बहुत अधिक श्रध्दा दिखाता है और उसे समाज में स्थापित करने का प्रयत्न करता है और उसकी स्थापना का मार्ग दर्शन भी करता है| इन विषयों की स्थापना के लिए इस्लामी सिध्धांत- तौहीद (एकेश्वरवाद), रिसालत (मुहम्मद ﷺ को नबी मानना) तथा आखिरत (प्रलय के दिन पर विश्वास)- की अधिक आवश्यकता है| इन सिध्धांतो में समाज की शांति और उन्नति छुपी हुई है|

मुहम्मद ﷺ ने इन्ही सिध्धांतो को अपनाते हुए (कुरआन और सुन्नत के प्रवचन द्वारा) समाज में शांति के स्थापना का एक अद्भुत उदहारण संसार को दिखाया| आप ﷺ कुरआन (book of peace) को आधार बनाकर

संसार में शांति की स्थापना की| उसके बिना संसार में शांति की स्थापना असंभव है| उस समय मक्का सारे संसार में सबसे बुरा स्थान माना जाता था| उस स्थान पर मुहम्मद ﷺ ने कुरआन द्वारा एक चमत्कार कर दिखाया| किसी भी वस्तु की सफलता उसके सफल परीक्षण पर निर्भर होती है|

इससे हमें पता चलता है कि, कुरआन और सुन्नत (मुहम्मद ﷺ के आचार) के द्वारा ही इस संसार में शांति की स्थापना हो सकती है|

<u>इस पुस्तक के लिखने का कारण:</u> हदीस के उल्लेखकर्ता ने अपने समय में, स्थिति के अनुसार हदीस का उल्लेखन किया| इस पुस्तक में भी उसी तरह से, आज के समय के अनुसार 'आतंकवाद' के विरुध्ध जो हदीस है, उन पर केन्द्रित किया गया है| इमाम नववी की पुस्तक 'अरबयीने नौवियह' से प्रेरित होकर हमने इस पुस्तक का नाम 'अरबयीने अमनियह' रखा है|

<u>मुलाहेज़ा:</u> इस्लाम धर्म हमें "तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म, और हमारे लिए हमारा धर्म" (कुरआन सूरह काफिरून 109:6) की शिक्षा देता है| इस्लाम धर्म मुस्लिम से अथवा ग़ैर मुस्लिम से अच्छे व्यवहार की शिक्षा देता है| इस्लाम धर्म ग़ैर मुस्लिम से उच्च व्यवहार करने से मना नहीं करता| उच्च व्यवहार ही से परलोक में मुक्ति प्राप्त होती है| इसलिए इस्लाम धर्म सब से उच्च व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करता है| अल्लाह ने एक ही आयत में इन दो विचारों को बता दिया है: "किन्तु यदि वे तुझपर दबाव डालें कि

तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीक़े से रहना।" (कुरआन सूरह लुक्मान 31:15)| इस तरह उन लोगो के साथ उच्च व्यवहार करने से भविष्य में वह इस्लाम की ओर चले आये|

इस विषय में यह बात याद रहे कि, इस्लाम के अखीदे (इस्लामी विश्वास) में किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता है|

धन्यवाद: इस पुस्तक के लिखे जाने में, जिन लोगो ने मेरी सहायता की है, चाहे वह ज्ञान से हो या धन से हो, मै उन सब को धन्यवाद कहना चाहता हूँ| जैसे- शेख अब्दुल्लाह उमरी, शेख नूरुद्दीन उमरी, फहीम साहब, जावीद साहब, नसरीन साहबा तथा आस्क इस्लाम पीडिया के पूरे टीम को धन्यवाद कहना चाहता हूँ|

हमारी इस पुस्तक को अल्लाह सारी मानवजाति के लिए शांति का सन्देश बना दे| वास्तव में इस्लाम धर्म शांति और समानता का प्रचार करता है|

मुहम्मद अरशद बशीर मदनी

संस्थापक तथा निर्देशक, askislampedia.com

आतंकवाद के विरुध्ध फ़तवा

LAW OF THE LAND का महत्त्व

भाग – 1

1. मानवजाती को शांति प्रदान करने वाला केवल अल्लाह है

कुरआन 1: और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसे चाहता है सीधी राह चलाता है; (सूरह यूनुस 10:25)

कुरआन 2: हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो (सूरह मायिदा 5:2)

कुरआन 3: और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न पैदा करो। (सूरह आराफ 7:56)

कुरआन 4: और जब उनसे कहा जाता है कि "ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो", तो कहते हैं, "हम तो केवल सुधारक हैं।" (सूरह बखरह 2:11)

हदीस 1: ऐ अल्लाह ! आप शांत हो और शांति आप से प्राप्त होती है; आप धन्य हो, ऐ महिमा तथा सम्मानित वाले| (सहीह मुस्लिम:591)

नोट: धर्म के तीन मूल स्तंभ है: इस्लाम, ईमान अथवा अहसान| यह तीन शांति को प्रेरित करते है, क्यों के इस्लाम शब्द 'सलाम' से लिया गया है, इसका अर्थ शांति है, ईमान का मूल शब्द 'अमन' है, जिसका

अर्थ सुरक्षा है तथा अहसान का मूल शब्द 'हसन' है, जिसका अर्थ भलाई है|

2. नबी ﷺ केवल मुस्लिम लोगो के लिए नहीं, बलके सारी मानवजाति के लिए दयावान बनाकर भेजे गए|

कुरआन 5: कहो, "ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है..." कुरआन) सूरह आराफ(7:158

कुरआन 6: हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (कुरआन सूरह अम्बिया 21:107)

3. जिस देश में रह रहे हो, उस देश का नियम का पालन करना आवश्यक है, यदि वह इस्लामी शरिया से न टकराए|

कुरआन 7: जब उनके पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है तो उसे फैला देते हैं, हालाँकि अगर वे उसे रसूल और अपने समुदाय के उत्तरदायी व्यक्तियों तक पहुँचाते तो उसे वे लोग जान लेते जो उनमें उसकी जाँच कर सकते हैं। और यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे चलने लग जाते। (कुरआन सूरह निसा 4:83)

कुरआन 8: ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है। (कुरआन सूरह निसा 4:59)

कुरआन 9: ऐ ईमान लानेवालो! प्रतिबन्धों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो। (कुरआन सूरह मायिदह 5:1)

कुरआन 10: ...हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो... (कुरआन सूरह मायिदह 5:2)

कुरआन 11: और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जाएगा। (कुरआन सूरह बनी इस्राईल 17:34)

नोट: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कभी किसी प्रतिज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, चाहे वह ग़ैर मुस्लिम लोग ही क्यों न हो| आप ने हुदैबिया समझौता भी नहीं तोडा, बलके ग़ैर मुस्लिम लोग ही ने प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया|

4. इस्लाम में आतंकवाद अवैध है / निशेधित (हराम)

कुरआन 12: इसी कारण हमने इसराईल की सन्तान के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इनसानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, उसने मानो सारे इनसानों को जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज़्यादतियाँ करनेवाले ही हैं। (कुरआन सूरह मायिदह 5:32)

कुरआन 13: यदि मोमिनों में से दो गरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इनसाफ़ करो। निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:9)

हदीस 2: "जिसने मुसलमानों से संधि किये हुए मनुष्य की हत्य की,वह स्वर्ग की सुगंध को न पायेगा, जबके स्वर्ग की सुगंध 40 वर्ष दूर से अनुभव होती है|" (सहीह बुखारी:3166)

हदीस 3: "अल्लाह के रसूल ﷺ ने पवित्र काबा को देखा और कहा: 'अल्लाह के सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं, तुम कितने उत्तम और पवित्र हो ! तुम्हारी सुगंध कितनी पवित्र और उत्तम है ! तुम कितनी महान और प्रशंसित हो ! तथा तुम्हारी

महानता और प्रशंसा कितनी पवित्र है ! जिसके हाथ में मुहम्मद के प्राण है, उसकी सौगंध, एक विश्वासी का रक्त एवं सम्पन्नता (प्राण) तुझसे अधिक पवित्र है !" (सहीह तरघीब:2441)

5. इस्लाम धर्म किसी प्रत्येक युग अथवा स्थान के लिए नहीं, किन्तु सब के लिए है

कुरआन 14: वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर प्रभावी कर दे, चाहे मुशरिकों को बुरा लगे। (कुरआन सूरह तौबा 9:33)

6. इस्लामी कार्यप्रणाली में प्रज्ञता होती है

कुरआन 15: अपने रब के मार्ग की ओर तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। (कुरआन सूरह नह्ल 16:125)

7. इस्लाम धर्म उसके पालन करने वालो को दूसरों की भलाई की शिक्षा देता है

कुरआन 16: उसने आकाश से पानी उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी समाई के अनुसार बह निकले। फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे वे ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही झाग उठता है। इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य की मिसाल बयान करता है। फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो कुछ लोगों को लाभ पहुँचानेवाला होता है, वह धरती में ठहर जाता है। इसी प्रकार अल्लाह दृष्टांत प्रस्तुत करता है। (कुरआन सूरह राद 13:17)

हदीस 4: दूसरों (मानवजाति) को अधिक लाभ पहुँचाने वाला सब से उत्तम व्यक्ति है| (सहीह अल जामे:3289)

8. इस्लाम धर्म मानवता को प्राधान्यता (गौरव) देता है तथा जाति प्रथा एवं वर्गीकरण को खंडन करता है

कुरआन 17: ऐ लोगो !हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बिलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:13)

9. इस्लाम धर्म मानवता का आदर करने की शिक्षा देता है

कुरआन 18: ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने आपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (कुरआन सूरह निसा 4:1)

10. इस्लाम मानवजाति को गौरव प्रदान करता है

कुरआन 19: हमने आदम की सन्तान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी-पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। (कुरआन बनी इस्राईल 17:70)

11. इस्लाम धर्म प्राण की रक्षा करता है, धरती पर आतंक फैलाना तथा निरपराध लोगो की हत्या की निंदा करता है

कुरआन 20: इसी कारण हमने इसराईल की सन्तान के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के

अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इनसानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, उसने मानो सारे इनसानों को जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज़्यादतियाँ करनेवाले ही हैं। (कुरआन सूरह माइदह 5:32)

कुरआन 21: और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि हक़ के लिए ऐसा करना पड़े। (कुरआन सूरह अनाम 6:151)

12. इस्लाम समाज में आपस में सहयोग को प्रेरित करता है

कुरआन 22: और जिनके मालों मेंमाँगनेवालों और वंचित का एक ज्ञात और निश्चित हक़ होता है, (कुरआन सूरह मारिज 70:24,25)

कुरआन 23: सदक़े तो बस ग़रीबों, मुहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों और उनके लिए जिनके दिलों को आकृष्ट करना औऱ परचाना अभीष्ट हो और गर्दनों को छुड़ाने और क़र्ज़दारों और तावान भरनेवालों की सहायता करने में, अल्लाह के मार्ग में, मुसाफ़िरों की सहायता करने में लगाने के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (कुरआन सूरह तौबा 9:60)

13. अल्लाह की दृष्टी में मनुष्य की गरिमा बहुत बड़ी है

कुरआन 24: तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना!" (कुरआन सूरह हिज्र 15:29)

कुरआन 25: हमने आदम की सन्तान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी-पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। (कुरआन सूरह बनी इस्राईल 17:70)

14. सृष्टि में मनुष्य सर्वोत्तम रचना है

कुरआन 26: निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया। (कुरआन सूरह तीन 95:4)

15. अल्लाह ने सारे जगत को मनुष्य के आधीन करके उसका सम्मान बढ़ाया है

कुरआन 27: क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने, जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी हैं? (कुरआन सूरह लुक्मान 31:20)

कुरआन 28: जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (कुरआन सूरह जासियह 45:13)

16. इस्लाम मनुष्य को सम्मान प्रदान करता है, चाहे वह जीवित हो या निर्जीव हो, चाहे वह मुस्लिम हो या घैर मुस्लिम हो

हदीस 5: मृतक मनुष्य के शिर (सर) को तोडना, विघात पहुँचाना- जीवित मनुष्य के साथ करने जैसा है| (सहीह अबू दावूद : 3207, सहीह)

17. इस्लाम में युध्ध के समय - स्त्री, शिशु, वृध्ध लोगों की हत्या निषेधित है

कुरआन 29: और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:190)

हदीस 6: अल्लाह के रसूल ﷺ ने किसी युध्ध में एक स्त्री को मृत्यु पाया| आप ने स्त्री तथा बच्चों की हत्या को अस्वीकृत (नापसंद) किया| (सहीह मुस्लिम:1744)

18. आत्महत्या तथा आत्मघात हमले को इस्लाम पूरी तरह से निषेद करता है

कुरआन 30: और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है। (कुरआन सूरह निसा 4:29)

19. मनुष्य की बुध्धि और मस्तिष्क की रक्षा के लिए इस्लाम हर तरह के नशावर, नशीले वस्तु को निषेध करता है

कुरआन 31: ऐ ईमान लानेवालो! ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गन्दे शैतानी काम हैं। अतः तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम सफल हो। (कुरआन सूरह मायिदह 5:90)

20. मानव जाती की वंशावली की रक्षा के लिए इस्लाम अनैतिक लैंगिक सम्बन्ध को निषेध करता है

कुरआन 32: और व्यभिचार के निकट न जाओ। वह एक अश्लील कर्म और बुरा मार्ग है। (कुरआन सूरह बनी इस्राईल 17:32)

21. संसार की अर्थ व्यवस्था को सुरक्षित रखने के लिए इस्लाम ने ब्याज, सूद को निषेध किया

कुरआन 33: और जो लोग ब्याज खाते हैं, वे बस इस प्रकार उठते हैं जिस प्रकार वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो और यह इसलिए कि उनका कहना है, "व्यापार भी तो ब्याज के सदृश है," जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अतः जिसको उसके रब की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले ले चुका वह उसी का रहा और मामला उसका अल्लाह के हवाले है। और जिसने फिर यही कर्म किया तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। उसमें वे सदैव रहेंगे।अल्लाह ब्याज को घटाता और मिटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी अकृतज्ञ, हक़ मारनेवाले को पसन्द नहीं करता| (कुरआन सूरह बखरह 2:275,276)

कुरआन 34: ऐ ईमान लानेवालो! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीक़े से न खाओ - यह और बात है कि तुम्हारी आपस में रज़ामन्दी से कोई सौदा हो - और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है। (कुरआन सूरह निसा 4:29)

22. इस्लाम सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को न्याय प्रदान करता है

कुरआन 35: ऐ ईमान लानेवालो! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीक़े से न खाओ - यह और बात है कि तुम्हारी आपस में रज़ामन्दी से कोई सौदा हो - और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है। (कुरआन सूरह निसा 4:29)

कुरआन 36: अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो। (कुरआन सूरह निसा 4:36)

कुरआन 37: निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (कुरआन सूरह नहल 16:90)

23. मनुष्य की मर्यादा (गौरव) को सुरक्षित रखने के लिए इस्लाम ने बुराई (चुघली) से, असत्य से, निंदा डालने से तथा दूसरों पर दोष लगाने से मना (निषेध) किया है

कुरआन 38: ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई गरोह दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाए, सम्भव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, सम्भव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति ज़ालिम हैं।ऐ ईमान लानेवालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे - क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह मरे हुए भाई का मांस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही। - और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:11,12)

24. इस्लाम हर तरह के बहुदेववाद, अविशवास, कपट, पाखण्ड, नास्तिकता तथा अज्ञेयवाद को निशेध करता है, फलस्वरूप मनुष्य में बुध्धि, धार्मिकता एवं इस्लाम के लिए दिल खुल जाता है

कुरआन 39: कहो, "वह अल्लाह यकता है, अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है, न वह जनिता है और न जन्य, और न कोई उसका समकक्ष है।" (कुरआन सूरह इखलास 112:1-4)

कुरआन 40: यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा दूसरे इष्ट-पूज्य भी होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः महान और उच्च है अल्लाह, राजासन का स्वामी, उन बातों से जो ये बयान करते हैं। (कुरआन सूरह अम्बिया 21:22)

कुरआन 41: अतः (वास्तविकता यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहने देना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है; मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है, जो ईमान नहीं लाते। (कुरआन सूरह अनाम 6:125)

कुरआन 42: अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि एक व्यक्ति है, जिसके मालिक होने में कई व्यक्ति साझी हैं, आपस में खींचातानी करनेवाले, और एक व्यक्ति वह है जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है। क्या दोनों का हाल एक जैसा होगा? सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, किन्तु उनमें से अधिकांश लोग नहीं जानते। (कुरआन सूरह ज़ुमर 39:29)

कुरआन 43: क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सबपर है? (कुरआन सूरह यूसूफ 12:39)

कुरआन 44: अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई अन्य पूज्य-प्रभु है। ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य-प्रभु अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता। महान और उच्च है अल्लाह उन बातों से, जो वे बयान करते हैं; (कुरआन सूरह मोमिनून 23:91)

नोट: इस्लाम जीवन के पांच आवश्यकताओं की सुरक्षा करता है- धर्म, प्राण, बुध्धि, मर्यादा अथवा धन| (शेख सालेह फौज़ान)२५८

25. इस्लाम ने वास्तविक समानता का सिध्धंत French Revolution से बहुत पहले प्रदान किया

कुरआन 45: ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने आपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (कुरआन सूरह बखरह निसा 4:1)

नोट: इस्लाम में समानता का अर्थ समरूपता नहीं, न्याय होता है|

26. इस्लाम धर्म अज्ञानता तथा जातिवाद को निषेध करता है| जातिवाद ही आतंकवाद का मूल है|

कुरआन 46: ऐ लोगो! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बिलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:13)

कुरआन 47: याद करो जब इनकार करनेवाले लोगों ने अपने दिलों में हठ को जगह दी, अज्ञानपूर्ण हठ को; तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमानवालों पर सकीना (प्रशान्ति) उतारी और उन्हें परहेज़गारी (धर्मपरायणता) की बात का पाबन्द रखा। वे इसके ज़्यादा हक़दार और इसके योग्य भी थे। अल्लाह तो हर चीज़ जानता है। (कुरआन सूरह फतह 48:26)

हदीस 7: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: अल्लाह ताला ने तुम में से इस्लाम से पूर्व का अहंकार तथा पूर्वज के बारे में घमंड निकाल दिया है| एक व्यक्ति या तो सच्चा विश्वासी होता है या पापी होता है| तुम लोग आदम की संतान हो और आदम मिट्टी से बनाया गया| लोग अपने पूर्वज के बारे में घमंड करना छोड़ दे| वह नरक की आग है; अल्लाह के पास उसका कोई स्थान नहीं, भौरा जो गोबर को अपने नाक से सूंघता है, उससे भी कम| (सुनन अबी दावूद:5116)

27. इस्लाम में न्याय को अनिवार्य किया गया, क्यों कि अन्याय आतंकवाद को जन्म देता है

कुरआन 48: निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (कुरआन सूरह नहल 16:90)

कुरआन 49: ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के लिए ख़ूब उठनेवाले, इनसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है। (कुरआन सूरह मयिदह 5:8)

हदीस 8: “तुमसे पूर्व जो जाती नाश हुई, उसका कारण यह था कि, यदि उत्तम व्यक्ति चोरी करता तो वह उसे छोड़ देते थे, और यदि निर्धन व्यक्ति चोरी करे तो उसे अल्लाह द्वारा निर्धारित दंड देते थे|” (सहीह बुखारी:3475)

28. इस्लाम में स्त्री का गौरव अनिवार्य है

कुरआन 50: और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। (कुरआन सूरह निसा 4:19)

29. इस्लाम एक व्यक्ति की भलाई को सम्मान देना अथवा बुराई को क्षमा तथा उपेक्षा करने की शिक्षा देता है

कुरआन 51: फिर यदि वे तुम्हें पसन्द न हों, तो सम्भव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे। (कुरआन सूरह निसा 4:19)

कुरआन 52: भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है। (कुरअन सूरह फुस्सिलत 41:34)

हदीस 9: जो लोगो को आभार (धन्यवाद) प्रकट नहीं करता, वह अल्लाह को आभार (धन्यवाद) प्रकट नहीं कर सकता| (सुनन अबी दावूद:4811, सहीह)

30. इस्लाम में अधिकार तथा कर्तव्य में शासक तथा प्रजा के मध्य कोई अंतर नहीं

हदीस 10: धर्म कल्याण, भलाई पर आधारित है| (सहीह मुस्लिम:55)

अबू बकर रज़िअल्लहुअन्हु ने कहा: यदि मै भलाई करू तो मेरा साथ देना और यदि मै बुराई करू, तो मुझे सुधारना| (अस सीरह लिबनी हिसाम – खुत्बतु अबी बकर)

हदीस 11: अब्दुल्लाह बिन उमर ने उल्लेख किया: अल्लाह के नबी ﷺ ने कहा: "निश्चय! हर कोई अपने अधिकार का बाध्य है: शासक अपनी प्रजा का संरक्षक है तथा अपने कर्तव्य का उत्तरदायी है; पुरुष अपने परिवार का संरक्षक है अथवा वह उस विषय में उत्तरदायी है; स्त्री अपने पति के घर तथा अपनि संतान की संरक्षक है अथवा वह उसकी उत्तरदायी है; सेवक अपने अधिकारी (मालिक) और उसकी संपत्ति का संरक्षक है अथवा वह उसका उत्तरदायी है| अर्थात, हर एक संरक्षक है तथा वह उसका उत्तरदायी है|" (सहीह बुखारी:7138)

हदीस 12: अल्लाह के नबी ﷺ ने कहा: धर्म कल्याण तथा भलाई का नाम है| इस पर हम ने कहा: किसके लिए? आप ने उत्तर दिया: अल्लाह के लिए, उसकी किताब के लिए, उसके रसूल के लिए तथा नेताओं के लिए और सामान्य विश्वासियों (मुस्लिमो) के लिए| (सहीह मुस्लिम: 55)

हदीस 13: रफ़ी बिन ख़दीज ने उल्लेख किया कि, अल्लाह के रसूल ﷺ मदीना आये और उस समय लोग पेड़ों का संशोधन कर रहे थे| आप ने कहा: तुम क्या कर रहे हो? उन लोगों ने कहा: हम इनका संशोधन कर रहे है| आप ने कहा: तुम लोग यदि ऐसा न करे तो ठीक रहेगा| उन लोगों ने ऐसा ही किया| उसके पश्चात खजूर के पेड़ का उत्पादन कम हो गया| यह विषय अल्लाह के रसूल के ज्ञान में लायी गयी| तब आप ने कहा: मै एक इन्सान हूँ, इसलिए जब मै किसी धर्म सम्बंधित विषय को कहता हूँ, तो उसे तुम स्वीकार करो, तथा जब मै

कोई व्यक्तिगत विचार प्रकट करू तो, ध्यान रहे कि मै एक इन्सान हूँ| इक्रिमा ने उल्लेख किया कि कुछ ऐसा ही कहा गया| (सहीह मुस्लिम:2362)

31. इस्लाम में जातिवाद को स्थान नहीं / हर प्रकार का जातिवाद – रंग, वर्ग, भाषा, ज्ञान, प्रदेश

कुरआन 53: ऐ लोगो! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बिलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है। कुरआन) सूरह हुजुरात (49:13

कुरआन 54: और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती का सृजन और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की विविधता भी है। निस्संदेह इसमें ज्ञानवानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं। (कुरआन सूरह रूम 30:22)

कुरआन 55: ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने आपनी माँगें रखते हो।

और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (कुरआन सूरह निसा 4:1)

हदीस 14: "ऐ लोगो, तुम्हारा अल्लाह (विधाता) एक है और तुम्हारा पिता भी एक है| वास्तव में किसी अरब को अरबेतर (ग़ैर अरब) पर या अरबेतर पर अरब को किसी प्रकार की विशिष्ठता नहीं, गोरे को काले पर या काले को गोरे पर, केवल तख्वा (अल्लाह का भय) ही से प्रधानता प्राप्त होती है| क्या मैंने संदेश पहुंचा दिया?" उन लोगों ने कहा: अल्लाह के रसूल ﷺ ने सन्देश पहुंचा दिया| तब आप ﷺ ने कहा, "जो इस समय यहाँ प्रस्तुत है, उन पर यह कर्तव्य है कि, वह जो इस समय नहीं है, उन लोगो तक यह सन्देश पहुंचाए|" (सहीह तर्घीब:2964)

हदीस 15: जो भलाई के कर्म करने में देर (आलस) करे, वह अपने वंश (चाहे बड़े वंश का हो) का कुछ लाभ न पायेगा| (सहीह मुस्लिम:2699)

हदीस 16: अरब वासी को अरबेतर (जो अरब वासी न हो) पर किसी प्रकार की प्रधानता नहीं, उसी तरह अरबेतर को अरब पर कोई प्रधानता नहीं| (सिलसिला सहीहा:2700)

हदीस 17: सारी मानवजाति आदम की संतान है तथा आदम की सृष्टी मिट्टी से हुई| (सुनन तिरमिज़ी:3956, सहीह)

32. स्त्री हो या पुरुष अल्लाह का प्रतिफल सामान है

कुरआन 56: जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (कुरआन सूरह नहल 16:97)

कुरआन 57: और उसकी कामना न करो जिसमें अल्लाह ने तुमसे किसी को किसी से उच्च रखा है। पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। अल्लाह से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है। (कुरआन सूरह निसा 4:32)

33. इस्लामी शिक्षा शांति तथा संतोषजनक जीवन प्रदान करती है

कुरआन 58: ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करनेवाली है, और जान रखो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है और यह कि वही है जिसकी ओर (पलटकर) तुम एकत्र होगे। (कुरआन सूरह अन्फाल 8:24)

34. शांति मानव जीवन में अति आवश्यक है (रोटी, कपडा और मकान समाज के मूल स्तंभ है, इस्लाम मनुष्य के इस अधिकार को सुरक्षित करता है

कुरआन 59: कितना है क़ुरैश को लगाए और परचाए रखना, लगाए और परचाए रखना उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से। अतः उन्हें चाहिए कि इस घर (काबा) के रब की बन्दगी करें, (जिसने उन्हें खिलाकर भूख से बचाया और निश्चिन्तता प्रदान करके भय से बचाया। (कुरआन सूरह खुरैश 106:1-4)

हदीस 18: "जो मनुष्य प्रभात समय जाग जाता है, वह अपना आवास सुरक्षित कर लेता है, बदन स्वस्थ रखता है, उस दिन का भोजन पा लेता है, ऐसा लगता है के उसके लिए संसार एकत्रित हो गयी हो|" (सुनन तिरमिज़ी:2346, सहीह)

35. इस्लाम धर्म हर नागरिक तथा वह व्यक्ति जो देश से अनुबंधित (संधि किया हुआ) हो उसे हानि पहुंचाने से रोकता है, तथा वचन पूरा करने का उपदेश देता है

हदीस 19: जिस व्यक्ति ने किसी ऐसे मनुष्य की हत्या की, जो मुसलमान लोगो के साथ संधि की हो तो वह व्यक्ति स्वर्ग की सुगंध न पा सकेगा| स्वर्ग की सुगंध 40 वर्ष दूर से अनुभव (महसूस) की जाती है|" (सहीह बुखारी: 3166)

हदीस 20: संधि किये हुए व्यक्ति के साथ यदि कोई दुर्व्यवहार करे या उसका अधिकार छीने या उससे उसके सामर्थ्य से अधिक काम ले या उसकी कोई चीज़ उसके अनुमति के बिना ले ले, तो मै उसकी ओर से प्रलय के दिन दुआ करूंगा| (सुनन अबी दावूद:3052)

हदीस 21: जिस व्यक्ति ने किसी ऐसे मनुष्य की हत्या की, जो मुसलमान लोगो के साथ संधि की हो तो वह व्यक्ति स्वर्ग की सुगंध न पा सकेगा| स्वर्ग की सुगंध 40 वर्ष दूर से अनुभव (महसूस) की जाती है|" (सहीह बुखारी: 3166)

36. इस्लाम धर्म शांति स्थापना की शिक्षा देता है

हदीस 22: अबू सुफ्यान के घर में जो प्रवेश करेगा, वह सुरक्षित है; जो अपने घर में छुप गया, वह सुरक्षित है; तथा जो मस्जिद में प्रवेश कर गया, वह भी सुरक्षित है| (सुनन अबी दावूद:3022)

37. आतंकवाद तथा अन्य हिंसा को समाप्त करने का मार्ग इस्लाम दर्शाता है

कुरआन 60: जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनका बदला तो बस यही है कि बुरी तरह से क़त्ल किए जाएँ या सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं में काट डाले जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार उनके लिए

दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है। (कुरआन सूरह माइदह 5:33)

38. इस्लाम धरम अत्याचार के विरुध्ध है तथा आक्रमण को निषेध करता है

कुरआन 61: और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:190)

हदीस 23: विरोधी से मिलने की कांक्षा मत करो, यदि मिल जाए तो धीरज रखो| (सहीह बुखारी:3026)

39. इस्लाम धर्म घैर मुस्लिम (अविश्वासी) को समान देने की अनुमति और शिक्षा देता है तथा घृणा (नफरत) को निषेध करता है, किन्तु सिध्धांत में कोई समझौता नहीं करता| इस्लाम दूसरे धर्म के भगवान अथवा पूजितो की निंदा निषेध करता है|

कुरआन 62: अल्लाह के सिवा जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम उनके प्रति अपशब्द का प्रयोग न करो। ऐसा न हो कि वे हद से आगे बढ़कर अज्ञान वश अल्लाह के प्रति अपशब्द का प्रयोग करने लगें। इसी प्रकार हमने हर गिरोह के लिए उसके कर्म को सुहावना बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब ही की ओर लौटना है। उस समय वह उन्हें बता देगा, जो कुछ वे करते रहे होंगे।(कुरआन सूरह अन आम 6:108)

कुरआन 63: आज तुम्हारे लिए अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल कर दी गईं और जिन्हें किताब दी गई उनका भोजन भी तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा भोजन उनके लिए हलाल है और शरीफ़ और स्वतंत्र ईमानवाली स्त्रियाँ भी, और वे शरीफ़ और स्वतंत्र ईमानवाली स्त्रियाँ भी जो तुमसे पहले के किताबवालों में से हों, जबकि तुम उनका हक़ (मेह्र) देकर उन्हें निकाह में लाओ। न तो यह काम स्वछन्द कामतृप्ति के लिए हो और न चोरी-छिपे याराना करने को। और जिस किसी ने ईमान से इनकार किया, उसका सारा किया-धरा अकारथ गया और वह आख़िरत में भी घाटे में रहेगा। (कुरआन सूरह माइदह 5:5)

कुरआन 64: और हमने मनुष्यों को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। किन्तु यदि वे तुझपर ज़ोर डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको पलटकर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ कुम करते रहे होगे। (कुरआन सूरह अनकबूत 29:8)

कुरआन 65: अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है।अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने से रोकता है जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने के सम्बन्ध में सहायता की। जो

लोग उनसे मित्रता करें वही ज़ालिम हैं। (कुरअन सूरह मुम्तहिनह 60:8-9)

कुरआन 66: वे चाहते हैं कि तुम ढीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। (कुरआन सूरह खलम 68:9)

कुरआन 67: तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म!" (कुरआन सूरह काफिरून 109:6)

कुरआन 68: अपने रब के मार्ग की ओर तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं। (कुरआन सूरह नहल 16:125)

40. इस्लाम धर्म आक्रमण, उत्पीडन, अधिकार के उल्लंघन का समर्थन नहीं करता

कुरआन 69: और इन्हें आदम के दो बेटों का सच्चा वृत्तान्त सुना दो। जब दोनों ने क़ुरबानी की, तो उनमें से एक की क़ुरबानी स्वीकृत हुई और दूसरे की स्वीकृत न हुई। उसने कहा, "मैं तुझे अवश्य ही मार डालूँगा।" दूसरे ने कहा, "अल्लाह तो उन्हीं की (क़ुरबानी) स्वीकृत करता है, जो डर रखनेवाले हैं। यदि तू मेरी हत्या करने के लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाएगा तो मैं तेरी हत्या करने के लिए तेरी ओर अपना हाथ नहीं

बढ़ाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है। मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले, फिर आग (जहन्नम) में पड़नेवालों में से हो जाए, और वही अत्याचारियों का बदला है।" अन्ततः उसके जी ने उसे अपने भाई की हत्या के लिए उद्यत कर दिया, तो उसने उसकी हत्या कर डाली और घाटे में पड़ गया। (कुरआन सूरह माइदह 5:27-30)

कुरआन 70: .....हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो....| (कुरआन सूरह माइदह 5:2)

कुरआन :71 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनका बदला तो बस यही है कि बुरी तरह से क़त्ल किए जाएँ या सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं में काट डाले जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार उनके लिए दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है। (कुरआन सूरह माइदह 5:33)

कुरआन 72: अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है। (कुरआन सूरह निसा 4:58)

कुरआन 73: अतः जो कोई कणभर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा, और जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा। (कुरआन सूरह ज़िलज़ाल 99:7,8)

हदीस 24: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा: प्रलय के दिन हर एक को उसके अधिकार मिलेंगे, यहाँ तक के बघैर सींग वाली बकरी को सींग वाली बकरी से उसके अधिकार प्राप्त होंगे| (सहीह मुस्लिम:2582)

हदीस 25: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया कि, अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: “दिवालिया कौन है, तुम्हे पता है?” लोगों ने कहा: “जिस के पास ना दिरहम (धन) हो ना संपत्ति, वह दिवालिया है|” अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: “मेरी उम्मत (जाती) में वह दिवालिया है, जो प्रलय के दिन नमाज़, उपवास तथा ज़कात के साथ आएगा, परन्तु किसी को गाली दी, किसी पर असत्य निंदा डाली, किसी का धन गलत तरीखे से ले लिया, किसी की हत्या की, किसी को मारा| उसे बिठाया जाएगा और उसके उपकार में से उन लोगो को उनका अधिकार दिया जाएगा| यदि उसके उपकार समाप्त हो जाए, पर उन लोगो का अधिकार बाखी रहे, तो उन लोगो के पाप इस पर डाल दिए जायेंगे, उसके बाद उसे नरक में डाल दिया जाएगा|” (सुनन तिरमिज़ी:2418, सहीह)

हदीस 26: अबू सलमा ने उल्लेख किया: उनके और दूसरे लोगो के बीच (ज़मीन के विषय में) विवाद था| जब उन्होंने आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह को यह विषय कहा तो उन्होंने कहा, “ऐ अबू सलमा! किसी की ज़मीन अन्याय से लेने से बचो, क्यों के अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, ‘यदि कोई एक बालिश (लम्बाई) ज़मीन भी किसी

की अन्याय से ले, तो (प्रलय के दिन) उसके गले में सात ज़मीन का तौख डाला जाएगा|" (सहीह बुखारी:2453)

हदीस 27: अब्दुल्लाह बिन उमर ने उल्लेख किया कि, रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा: "मज़दूर (श्रमिक) को उसका पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी (वेतन) देदो|" (सुनन इब्ने माजह: 2443)

आतंकवाद के विरुध्ध फ़तवा

भाग – 2

41. इस्लाम धर्म में शांति की शिक्षा, एक अद्भुत है

कुरआन 74: ऐ बुद्धि और समझवालो! तुम्हारे लिए क़िसास (हत्यादंड) में जीवन है, ताकि तुम बचो। (कुरआन सूरह बखरह 2:179)

42. इहलोक तथा परलोक में शांति का सही मार्ग इस्लाम धर्म द्वारा ही है| क्यों कि केवल सृष्टिकर्ता (अल्लाह) ही को शांति का सही मार्ग पता है| मानव नियम से उचित सृष्टिकर्ता के नियम है, जो मानवजाति के लिए व्यावहारिक रूप से संभव है|

कुरआन 75: क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया? वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है। (कुरआन सूरह मुल्क 67:14)

कुरआन 76: और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और जानता अल्लाह है, और तुम नहीं जानते।" (कुरआन सूरह बखरह 2:216)

नोट: तौहीद (एकेश्वरवाद), रिसालत (मुहम्मद ﷺ को नबी [ईशदूत] स्वीकार करना) तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर विशवास द्वारा ही शांति की स्थापना होती है और आतंकवाद समाप्त होता है|

43. इस्लाम हर तरह के अतिवाद की निंदा करता है – क्यों कि अतिवाद ही हिंसा तथा आतंक को जन्म देता है

कुरआन 77: ...अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:205)

हदीस 28: 'धर्म में अतिवाद से बचो, क्यों कि पूर्व के कई जाती, इसी अतिवाद के कारण विनाश किये गए|' (सुनन इब्न माजह:3029, सुनन नसाई:3059)

44. इस्लाम धर्म शरीर तथा आत्मा को भोजन प्रतादान करता है और इस्लाम हर विषय में समतुलना का पालन करता है

कुरआन 78: जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।" (कुरआन सूरह खसस 28:77)

कुरआन 79: निस्संदेह मनुष्य अधीर पैदा हुआ है। (कुरआन सूरह मआ रिज 70:19)

कुरआन 80: और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है, ताकि तुम सारे मनुष्यों पर गवाह हो, और रसूल तुमपर गवाह हो....| (कुरआन सूरह बखरह 2:143)

कुरआन :81 न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तौल में कमी न करो। (कुरआन सूरह रहमान 55:9)

45. इस्लाम धर्म आसानी पर आधारित है

कुरआन 82: ....अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता,....| (कुरआन सूरह बखरह 2:185)

कुरआन 83: ....और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी**.....|** (कुरआन सूरह हज 22:78)

हदीस 29: "लोगो के लिए सुविधा प्रदान करो तथा उनके लिए कठिनाई में ना डालो (लोगो के प्रति दयालु बनो, उनसे कठोर मत बनो) अथवा लोगो को शुभ सन्देश दिया करो, उन्हें निष्कासित ना करना|" (सहीह बुखारी:4341)

हदीस 30: "धर्म बहुत सरल तथा आसान है और जो कोई धर्म में कष्ट डाले, वह उस पर बाखी नहीं रह पाता| इसलिए तुम लोग अतिवाद से दूर रहो, परन्तु परिपूर्णता के समीप रहो तथा तुम्हे मिलने वाले प्रतिफल की शुभ सूचना पाओ; दिन और रात में उपासना करो, इससे तुम्हे शक्ति प्राप्त होती है|" (सहीह बुखारी:39)

46. इस्लाम धर्म स्वतंत्रता से अपनी इच्छा व्यक्त करने की अनुमति प्रदान करता है, बलपूर्वक इस्लाम धर्म में किसी को लाना सख्ती से निषेधित है

कुरआन 84: धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। (कुरआन सूरह बखरह 2:256)

कुरआन 85: यदि तुम्हारा रब चाहता तो धरती में जितने लोग हैं वे सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वे मोमिन हो जाएँ? (कुरआन सूरह यूनुस 10:99)

47. इस्लाम का परिचय दूसरे धर्म वालो को अति विनम्रता से देना आवश्यक है

कुरआन 86: उससे नर्म बात करना, कदाचित वह ध्यान दे या डरे।" (कुरआन सूरह ताहा 20:44)

कुरआन 87: (तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं। (कुरअन सूरह आले इमरान 3:159)

हदीस 31: अनस बिन मालिक ने उल्लेख किया: एक समय हम मुहम्मद ﷺ के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे, उस समय एक देहाती अरब व्यक्ति आया और मस्जिद में मूत्र करने लगा| मुहम्मद ﷺ के साथी (सहाबा) उसे रोकने लगे, तो मुहम्मद ﷺ ने कहा: उसे मत रोको, छोड़ दो| वह उसे छोड़ दिए और जब उसका मूत्र करना समाप्त

हो गया तो आप ﷺ ने उसे अपने पास बुलाकर कहा: यह मस्जिद है, यहाँ मूत्र नहीं करना चाहिए, यह अल्लाह की उपासना का स्थान है, नमाज़ तथा कुरआन पाठ करने का स्थान है या मुहम्मद ﷺ ने कुछ इसी तरह कहा| उसने (उल्लेखकर्ता ने) कहा कि, आप (मुहम्मद ﷺ) ने एक व्यक्ति को आदेश दिया और उसने बाल्टी में पानी लाकर उस (मूर्त के) स्थान पर डाल दिया| (सहीह मुस्लिम:285)

48. इस्लाम धर्म आक्रामक, असभ्यता तथा अतिवाद के विरुध्ध है| आसानी अथवा भलाई को प्रेरित करता है., हर तरह की कठिनाई और कठोरता को समाप्त करता है|

हदीस 32: अपने आप पर कठोर मत बनो, यदि ऐसा करोगे तो तुम पर कठोरता डाली जायेगी; लोगो ने अपने ऊपर कठिनाई डाल ली तो अल्लाह ने उन पर कठिनाई उतारी| उनके बचे लोग मठ में पाए जाते है| (उसके बाद इस तरह कहा:) “मठ (ब्रह्मचर्यता) को उन्होंने आरम्भ किया, हमने इसको निर्धारित नहीं किया| (सुनन अबी दावूद:4904)

हदीस 33: “लोगो के लिए सुविधा प्रदान करो तथा उनके लिए कठिनाई में ना डालो (लोगो के प्रति दयालु बनो, उनसे कठोर मत बनो) अथवा लोगो को शुभ सन्देश दिया करो, उन्हें निष्कासित ना करना|” (सहीह बुखारी:4341)

49. कोई समाचार- इन्टरनेट या मीडिया द्वारा- मिले तो उसे छान बीन करे बिना न फैलाये

कुरआन 88: ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:6)

हदीस 34: जो अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर विश्वास रखता हो, वह सत्य कहे या चुप रहे| (सहीह बुखारी:6475)

हदीस 35: हर सुनी हुई बात को कह देना, मनुष्य को झूठा (असत्यवादी) प्रमाणित करता है| (सहीह मुस्लिम:5)

हदीस 36: "जो विषय उससे सम्बंधित न हो, उसे छोड़ देना मनुष्य के इस्लाम का उत्तम दर्शन है|" (सुनन तिरमिज़ी:2317, सहीह)

50. इस्लाम धर्म का मूल उपदेश शांति का प्रचार है तथा मूल स्तंभ भी शांति है

हदीस 37: जिस चीज़ में विनम्रता होती है, वह सुन्दर दिखती है तथा जिस चीज़ में विनम्रता ना हो, वह विकृत दिखाई देती है| (सहीह मुस्लिम:2594)

हदीस 38: जिस व्यक्ति में विनम्रता ना हो, उसमे भलाई ना पायी जायेगी| (सहीह मुस्लिम:2592)

51. उच्च व्यक्तित्व की प्रामुख्यता (दूसरों के अधिकार की रक्षा करना), इसी के कारण भलाई पायी जाती है तथा आतंकवाद समाप्त होता है

हदीस 39: अब्दुल्लाह बिन अम्र ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कभी बुरे शब्द का उपयोग नहीं किया और ना ही लड़ने झगड़ने वाले थे| आप ﷺ ने कहा कि, "तुम में सब से अच्छा वह है, जो उच्च व्यवहार तथा व्यक्तित्व वाला हो|" (सहीह बुखारी: 3559)

हदीस 40: अब्दुल्लाह बिन अम्र ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कभी किसी की निंदा नहीं की और ना ही कभी बुरी बात कही| आप ﷺ कहते थे, "जिसके पास उच्च व्यवहार तथा व्यक्तित्व हो, मुझे वह अधिक पसंद है|" (सहीह बुखारी:3759)

52. इस्लाम धर्म स्वयं के क्रोध पर नियंत्रण पाने तथा लेन देन के विशय में निग्रह की शिक्षा देता है, इससे आतंकवाद समाप्त होता है

कुरआन 89: वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं - और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। (कुरआन सूरह आले इमरान 3:134)

कुरआन 89: वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं - और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। (कुरआन सूरह आले इमरान 3:134)

हदीस 41: "बलवान वह नहीं, जो लोगो को अपने बल से हरा दे, बलवान तो वो है, जो क्रोध को काबू करे|" (सहीह बुखारी:6114)

हदीस 42: "बलवान वह नहीं, जो लोगो को अपने बल से हरा दे, बलवान तो वो है, जो क्रोध को काबू करे|" (सहीह मुस्लिम:2609)

हदीस 43: एक व्यक्ति ने मुहम्मद ﷺ से कहा, "मुझे सलाह दीजिये!" अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "क्रोध में मत आना|" उस व्यक्ति ने (फिर) वही प्रश्न किया, अल्लाह के रसूल ﷺ ने हर समय, यही उत्तर दिया कि, "क्रोध में मत आना|" (सहीह बुखारी:6116)

हदीस 44: एक विश्वासी (पुरुष), विश्वासी (स्त्री) से घृणा ना करे, यदि उसे कोई उसमे कोई चीज़ अच्छी ना लगे तो, कोई दूसरी चीज़ अच्छी होगी| (सहीह मुस्लिम:1468)

हदीस 45: "क्रय, विक्रय तथा अपना धन मांगते समय, जो व्यक्ति उदारता का प्रदर्शन करेगा, उस पर अल्लाह दया करेगा|" (सहीह बुखारी:2076)

हदीस 46: अल्लाह के रसूल ﷺ ने अब्दुल खैस जाती के नायक, अशाज्ज से कहा: तेरे भीतर दो उच्च गुण है, जिसे अल्लाह पसंद करता है: अंतर्दृष्टि तथा सोच विचार कर कर्म करना| (सहीह मुस्लिम:17)

हदीस 47: विवेचना अल्लाह की ओर से है तथा जल्दबाज़ी शैतान के ओर से है| (सहीह अल जामे:3011)

हदीस 48: ज्ञान सीखने से आता है तथा धीरज धैर्य से पाया जाता है| (सहीह अल जामे:2328)

हदीस 49: जो व्यक्ति धीरज रखना चाहता है, अल्लाह उसे धीरज प्रदान करता है| (सहीह अल जामे:6470)

नोट: अल्लाह के रसूल ﷺ के जीवन को उदाहरण बनाकर, इन्सान अपने क्रोध पर काबू प्राप्त कर सकता है| क्रोध ही हर बुराई (आतंकवाद, हिंसा) का मूल कारण होता है|

53. इस्लाम धर्म में सफलता के चार (4) विषय है; उनमे एक- धीरज रखना, उसे अपने जीवन में पालन तथा लागू करना

कुरआन :91 गवाह है गुज़रता समय, कि वास्तव में मनुष्य घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद की, और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की। (कुरआन सूरह अस्र 103:1-3)

हदीस 50: जो व्यक्ति धीरज रखना चाहता है, अल्लाह उसे धीरज प्रदान करता है| (सहीह अल जामे:6470)

नोट: सफलता के 4 विषय है: 1- इस्लाम पर विश्वास तथा इस्लाम का ज्ञान 2- भले कर्म करना 3- सत्यता का साथ देना 4- धीरज रखना| यह चार (4) इस्लाम के मूल विषय है, जो कुरआन के सूरह अस्र में बताये गए है|

54. त्याग तथा प्यार से शांति स्थापित होती है और आतंकवाद समाप्त होता है

कुरआन 92: और उनके लिए जो उनसे पहले ही से हिजरत के घर (मदीना) में ठिकाना बनाए हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, वे उनसे प्रेम करते हैं जो हिजरत करके उनके यहाँ आए हैं और जो कुछ भी उन्हें दिया गया उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं पाते और वे उन्हें अपने मुक़ाबले में प्राथमिकता देते हैं, यद्यपि अपनी जगह वे स्वयं मुहताज ही हों। और जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिया जाए ऐसे लोग ही सफल हैं। (कुरआन सूरह हषर 59:9)

हदीस 51: “अपने स्वयं के लिए जो चाहता है, उसे अपने भाई (मुस्लिम) के लिए जब तक न चाहे, उसका विश्वास (ईमान) पूर्ण नहीं है|” (सहीह बुखारी:13)

55. इस्लाम धर्म लालच तथा बुरी इच्छा (वासना) के विरुध्ध है, क्यों कि इससे दूसरे लोगो के प्रति द्वेष तथा क्रोध उत्पन्न होता है

कुरआन 93: अतः जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का डर रखो और सुनो और आज्ञापालन करो और ख़र्च करो अपनी भलाई के लिए। और जो अपने मन के लोभ एवं कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफल हैं। (कुरआन सूरह तघाबुन 64:16)

हदीस 52: "दो भेडियो को यदि बकरियों के समूह में छोड़ दे तो उतना हानीकारक नहीं, जितना किसी व्यक्ति में धन तथा प्रतिष्ठा का लोभ करता है|" (सुनन तिरमिज़ी:2376, सहीह)

56. इस्लाम धर्म ईर्षा, गर्व, दूसरों को अपमानित करना, स्वार्थ, काम वासना तथा क्रोध को निषेध करता है

हदीस 53: आपस में एक दूसरे से ईर्षा ना करो, आपस में एक दूसरे से घृणा ना करो, आपस में एक दूसरे से सम्बन्ध ना काटो (तोड़ो) और आपस में अल्लाह के दास तथा भाई भाई बने रहो| (सहीह मुस्लिम:2559)

हदीस 54: अल्लाह ने कहा: अभिमान (गौरव) मेरी चादर है, महिमा मेरा अंतर्गत वस्त्र (under garment) है, जो भी इन दोनों में से किसी को मुझ से छीनने का प्रयत्न करेगा उसे मै नर्क में डाल दूंगा| (सुनन अबी दावूद:4090)

हदीस 55: जिस किसी के दिल में राई (सरसों) के दाने के बराबर भी गर्व होगा, वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा| एक व्यक्ति ने कहा: हर व्यक्ति चाहेगा कि, उसके वस्त्र अच्छे हो, जूते अच्छे हो| अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: अल्लाह सुन्दर है तथा सुन्दरता को पसंद करता है| गर्व तो यह है कि, सत्य को इनकार करना अथवा दूसरो को नीचा दिखाना है| (सहीह मुस्लिम:91)

हदीस 56: मेरे पश्चात तुम देखोगे कि लोग दूसरों को प्राधान्यता दे रहे है, उस समय तुम मुझसे से मिलने तक धीरज रखो| (सहीह बुखारी:2377)

57. इस्लाम धर्म लोगो के दिलों से आतंकवाद के बीज को निकाल देता है

हदीस 57: प्रलय के दिन (अंतिम दिन) अल्लाह की दृष्टी में सबसे नीच व्यक्ति वह है जो दो चेहरें वाला होता है – किसी के आगे एक चेहरा और दूसरे के आगे दूसरा चेहरा रखने वाला| (सहीह बुखारी:6058)

हदीस 58: जिनकी भाषा अथवा अत्याचार से लोग दूर भागते है, वह सबसे नीच लोग है| (सहीह बुखारी:6054)

58. इस्लाम धर्म आपस में भेंट, उपहार देने को प्रोत्साहित करता है; इसके कारण हर तरह का द्वेष समाप्त होता है

हदीस 59: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया कि, अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: "यदि कोई मुझे बकरी के बाजू या पाए के मांस पर भी निमंत्रण (दावत) देगा तो मै स्वीकार करूंगा, और यदि कोई बकरी के बाजू या पाए का मांस भी भेंट देगा तो मै स्वीकार करूंगा|" (सहीह बुखारी:2568)

हदीस 60: आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह ने उल्लेख किया कि, अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ भेंट (उपहार) स्वीकार करते थे तथा उसके बदले में कुछ दे भी देते थे| (सहीह बुखारी:2585)

हदीस 61: आपस में एक दूसरे को उपहार दिया करो, इससे आपस में प्रेम बढेगा| (सहीह अल जामे:3004)

59. इस्लाम धर्म लोगो के अधिकार गौरव करने की, उसे ना तोड़ने की तथा आपस में प्रेम करने की और आपस में एक दूसरे पर दया करने की शिक्षा, प्रोत्साहन देता है

हदीस 62: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया कि: सबसे बुरा भोजन (खाना) वह है जो, किसी के विवाह में बनाया जाए और उसमे सब धनि लोग बुलाये जाए और कोई निर्धन को ना बुलाया जाए| और जो भी निमंत्रण को स्वीकार ना करे, वह अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा| (सहीह बुखारी:5177)

हदीस 63: जिस तरह व्याधि (बुखार) में इन्सान को बहुत कष्ट होता है, शरीर के एक भाग में दर्द हो तो पूरे शरीर में दर्द होने लगता है, वह सारी रात सो नहीं पाता है, उसी तरह विश्वासी (मुसलमान) को भी आपस में एक शरीर की तरह होना चाहिए| (सहीह मुस्लिम:2586)

60. इस्लाम धर्म बिना ब्याज के खर्ज (रुण) देने को उत्तम स्वभाव कहता है, इससे प्रेम की भावना उत्पन्न होती है, क्यों कि ब्याज अल्लाह की दया तथा करुणा को नष्ट करता है

हदीस 64: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया कि: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "एक व्यापारी था, जो लोगो को रुण (खर्ज) देता था और जब वह रुणग्रस्त कुछ संकट स्थिति में हो तो, वह अपने कर्मचारियों से कहता कि, 'उसे क्षमा कर दो, अल्लाह हमें क्षमा करेगा|' अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया|'" (सहीह बुखारी:2078)

61. विवादित व्यक्ति से दूर रहे, क्यों कि यही से आतंक आरम्भ होता है

हदीस 65: आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "अल्लाह की दृष्टी में अत्यंत घृणा वाला व्यक्ति वह है जो उपद्रवी (झगडालू) है|" (सहीह बुखारी:7188)

62. राहत कार्य तथा सहायता को इस्लाम प्राधान्यता देता है

हदीस 66: पीड़ित व्यक्ति की सहायता करो तथा मार्ग भ्रष्ट लोगो को सत्य मार्ग दिखाओ| (सुनन अबी दावूद:4817, सहीह)

63. इस्लाम धर्म की शिक्षा हानि ना पहुँचाना है

हदीस 67: जब तीन लोग साथ हो तो एक व्यक्ति को अलग ना करे तथा दो लोग गुप्त बात ना करे| (सहीह बुखारी:6288)

64. इस्लाम धर्म अनाथ की संरक्षा करने की शिक्षा देता है

हदीस 68: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, “मै और वह व्यक्ति जो अनाथ की परवरिश (देखभाल) करता है, स्वर्ग में (हम दोनों) ऐसे रहेंगे,” अपनी तर्जनी (index finger) और बीच की ऊँगली (middle finger) को एक साथ रखा| (सहीह बुखारी:6005)

65. आतंकवाद से मानवजाति की रक्षा के लिए इस्लाम धर्म ने, हिंसा को अवैध (हराम) किया

कुरआन 94 वे जब भी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। वे धरती में बिगाड़ फैलाने के लिए प्रयास कर रहे हैं, हालाँकि अल्लाह बिगाड़ फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह मायिदा 5:64)

कुरआन 95: और जब वह लौटता है तो धरती में इसलिए दौड़-धूप करता है कि इसमें बिगाड़ पैदा करे और खेती और नस्ल को तबाह करे, जबकि अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:205)

कुरआन 96: ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ। (कुरआन सूरह हुजुरात 49:6)

हदीस 69: "जो कोई अपनी आयु और धन में वृध्धि चाहता है, वह अपने सम्बन्धियों से अच्छे सम्बन्ध रखे|" (सहीह बुखारी:2067)

हदीस 70: जिसकी इच्छा हो कि, उसके धन में वृध्धि हो तथा आयु बढे, उसे चाहिए कि, संबंधो को जोड़े रखे| (सहीह मुस्लिम:2557)

हदीस 71: चुघली (किसी के पीछे बुराई) करने वाला कभी स्वर्ग में प्रवेश ना करेगा| (सहीह मुस्लिम:105)

हदीस 72: जिसके दिल में सरसों की बीज (राई) के बराबर भी अहंकार हो, वह स्वर्ग में ना जायेगा| (सहीह मुस्लिम:91)

हदीस 73: "संबंधों को तोड़ने वाला स्वर्ग में प्रवेश ना करेगा|" (सहीह बुखारी:5984)

66. इस्लाम धर्म पडोसी (मुस्लिम या गैर मुस्लिम) के अधिकार की रक्षा करता है

हदीस 74: "वह व्यक्ति विश्वासी (मुस्लिम) नहीं है, जिसका पडोसी भूका हो|" (सिलसिला सहीहा:149)

हदीस 75: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "जिब्रईल मुझे पडोसी के अधिकार के बारे में इतना कहते थे कि, मुझे ऐसा लगने लगा कही वह पडोसी को मेरे वारिस (उत्तराधिकारी) ना बना दे|" (सहीह बुखारी:6014)

हदीस 76: वह व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश ना करेगा, जिसका पडोसी उसके बुरे व्यवहार से सुरक्षित ना हो| (सहीह मुस्लिम:46)

हदीस 77: माखिल ने उल्लेख किया: "वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने दूसरो पर राज करने का अधिकार दिया, यदि वह उनके साथ न्याय ना करे, तो वह स्वर्ग की सुगंध तक ना सूंघ पायेगा|" (सहीह बुखारी:7150)

हदीस 78: अल्लाह के रसूल ने कहा: "तुम में से कोई अपने पडोसी को दीवार में किरण (लकड़ी गाड़ने) से ना रेक|" (सहीह मुस्लिम:1609)

हदीस 79: आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "जिब्रईल मुझे पडोसी के अधिकार के बारे में इतना कहते थे कि, मुझे ऐसा लगने लगा कही वह पडोसी को मेरे वारिस (उत्तराधिकारी) ना बना दे|" (सहीह बुखारी:6014)

हदीस 80: अबू शुरैह ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "अल्लाह की कसम, वह विश्वासी (मुस्लिम) नहीं है! अल्लाह की कसम, वह विश्वासी (मुस्लिम) नहीं है! अल्लाह की कसम, वह विश्वासी (मुस्लिम) नहीं है!" पूछा गया, "वह कौन है, अल्लाह के रसूल?" आप ने कहा, "वह व्यक्ति, जिसका पडोसी उसकी बुराई से सुरक्षित ना हो|" (सहीह बुखारी:6016)

हदीस 81: वह व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश ना करेगा, जिसका पडोसी उसके बुरे व्यवहार से सुरक्षित ना हो| (सहीह मुस्लिम:46)

हदीस 82: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "जो व्यक्ति अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर विशवास रखता हो, वह कहे तो अच्छा कहे, यद्यपि चुप रहे; जो व्यक्ति अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर विशवास रखता हो, अपने पडोसी को हानि (अपमान) ना पहुंचाये; जो व्यक्ति अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर विशवास रखता हो, अपने अतिथि की मर्यादा करे|" (सहीह बुखारी:6475)

हदीस 83: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, ऐ मुस्लिम महिलाओं, बकरी का पाया भी अपने पडोसी को देने के लिए तुच्छ मत जानो| (सहीह मुस्लिम:1030)

हदीस 84: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया के अल्लाह के रसूल ﷺ ने मुझे आदेश दिया कि, जब भी तुम अपने घर में कोई शोरबा (सालन) बनाओ, तो पडोसी के घर के लोगो का ध्यान भी रखो, और उन्हें भी कुछ शोरबा (सालन) भेज दो| (सहीह मुस्लिम:2625)

67. इस्लाम धर्म ट्रैफिक (traffic) नियम पालन करने की शिक्षा देता है

हदीस 85: अबू सैद अल खुदरी ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "सावधान! रास्ते (road) में ना बैठे|" लोगो ने कहा, "हम यही पर बैठकर बात चीत करते है, हम मजबूर है|" अल्लाह के र्फसूल ﷺ ने कहा, "यदि वहा पर बैठना तुम्हारी मजबूरी हो तो फिर रास्ते का हख (अधिकार) अदा करो|" लोगो ने पूछा, "रास्ते का हख (अधिकार) क्या है?" आप ﷺ ने कहा, "अपनी निगाह को नीची रखो (अवैध चीज़ को मत देखो), लोगो को हानि पहुंचाने से बचो, सलाम (अभिवादन) का उत्तर दो, लोगो को भले विषय का आदेश देना और बुरे से रोकना|" (सहीह बुखारी:2465)

68. इस्लाम धर्म स्वच्छ वातावरण बनाने की तथा स्वयं अथवा समाज में स्वच्छता की शिक्षा देता है

हदीस 86: विशवास के सत्तर या साठ भाग है, उनमे सबसे उत्तम, अल्लाह के सिवा कोई पूजित नहीं की घोषणा, कोई चीज़ जो दूसरों को

हानि पहुंचाए उसे रास्ते से हटाना, सबसे नम्र विशवास का भाग है: और लज्जा (शीलता) विश्वास का शाख (डाल) है| (सहीह मुस्लिम:35)

हदीस 87: अल्लाह के ईशदूत ﷺ ने कहा: अभिशाप के दो कर्म से बचो| उन्होंने (उस समय वहां उपस्थित सहाबा ने) पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! वह कर्म क्या है जो अभिशाप के पात्र दार है? आप ﷺ ने कहा: रास्ते (मार्ग) में या विश्राम करने के स्थान पर मल मूत्र विसर्जन करना| (सहीह मुस्लिम:269)

हदीस 88: स्वच्छता आधे विशवास (ईमान) के समान है| (सहीह मुस्लिम:223)

69. अल्लाह की दया के पात्र बनना हो तो, लोगो पर दया करना चाहिए

हदीस 89: अल्लाह के ईशदूत ने कहा, "तुम देखोगे कि, विश्वासी (मुस्लिम) आपस में एक दूसरे से दया तथा कृपा का व्यवहार करेंगे और वह लोग (मुस्लिम) एक दूसरे के साथ एक शरीर जैसे होंगे, यदि शरीर के एक भाग में कष्ट हो तो सारे शरीर में कष्ट होता है, नींद खो जाती है और ज्वर (बुखार) आ जाता है|" (सहीह बुखारी:6011)

हदीस 90: मै मुहम्मद तथा अहमद तथा मुखफ्फी (----) तथा हशिर, तौबा (पश्चाताप) का ईशदूत (नबी) तथा दया का ईशदूत हूँ| (सहीह मुस्लिम:2355)

हदीस 91: जो व्यक्ति दूसरे लोगो पर दया नहीं करता, उस पर भी दया नहीं की जायेगी|" (सहीह बुखारी:5997)

हदीस 92: अब्दुल्लाह इब्न अम्र इब्न अल आस ने उल्लेख किया: अल्लाह के ईशदूत (रसूल) ﷺ ने कहा: जो लोग दयालु है सर्वश्रेष्ठ अल्लाह उन पर दया करेगा| यदि आप ज़मीन वालो पर दया करेंगे, तो आसमान वाला आप पर दया करेगा| (सुनन अबी दावूद:4941, सहीह)

70. इस्लाम धर्म बच्चों पर दया करने की शिक्षा देता है

हदीस 93: आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह ने उल्लेख किया: एक ग्रामीण व्यक्ति अल्लाह के रसूल ﷺ के पास आया और कहा, "तुम (लोग) बच्चों को प्यार (चुम्बन) करते हो! हम उन्हें प्यार (चुम्बन) नही करते|" अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: "मै तुम्हारे दिल में दया नहीं डाल सकता, जबके अल्लाह ने उसे निकाल दिया है|" (सहीह बुखारी:5998)

हदीस 94: केवल दयनीय व्यक्ति से ही दया छीन ली जाती है| (सुनन अबी दावूद:4942)

हदीस 95: "जो व्यक्ति अन्य लोगो पर दया नहीं करता, अल्लाह भी उस पर दया नहीं करता|" (सहीह बुखारी:7376)

हदीस 96: अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल हसन बिन अली को प्यार किया (चूमा), उस समय अल अखरा बिन हाबिस अत तमीम वहाँ उपस्थित थे| अल अखरा ने कहा, "मेरे दस बच्चे (संतान) है, पर मैंने

कभी किसी को प्यार (चूमा) नहीं किया|" अल्लाह के रसूल ﷺ ने उसकी ओर देखा और कहा, "जो लोगो पर दया नहीं करता, उस पर दया नहीं की जायेगी|" (सहीह बुखारी:5997)

71. इस्लाम धर्म मुस्लिमेतर (गैर मुस्लिम) पर दया करने की शिक्षा देता है

हदीस 97: यहूदी लोग अल्लग के रसूल ﷺ के पास आये और कहने लगे, "अस-सामु अलैकुम" (आप पर मृत्यु (नाश) हो)| आइशा ने (उनसे) कहा, "(मरण) तुम पर हो, अल्लाह तुम्हे अभिशाप दे और अपना क्रोध तुम पर बरसाए!" अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "ऐ आइशा, शांत रहो! तुम्हे दयालु तथा उदार होना चाहिए, कठोरता एवं बुरे बोल से बचना चाहिए|" उन्होंने (अल्लाह के रसूल ﷺ से) कहा, "आप ने नहीं सुना उन लोगों (यहूदियों) ने क्या कहा?" आप ﷺ ने कहा, "तुम ने नहीं सुना मैंने (उनसे) क्या कहा? मैंने उन्हें वही कहा| उनके विरुध्ध मेरी दुआ (प्रार्थना) स्वीकार की जायेगी तथा उनकी मेरे विरुध्ध (अल्लाह द्वारा) स्वीकृत ना होगी|" (सहीह बुखारी:6030)

हदीस 98: जो व्यक्ति कृपा से वंचित है, वास्तव में वह भलाई से वंचित है| (सहीह मुस्लिम:2592)

हदीस 99: ऐ अल्लाह! जिस व्यक्ति को कुछ लोगो पर अधिकार प्राप्त हो और वह उन पर दया ना करे- आप भी उन पर दया ना करना; तथा जिस व्यक्ति को कुछ लोगो पर अधिकार प्राप्त हो और वह उन पर दया करे- आप भी उन पर दया कीजिये| (सहीह मुस्लिम:1828)

हदीस 100: जिस चीज़ (विषय) में उदारता होती है, वह सुन्दर दिखाई देती है, तथा जिस चीज़ (विषय) में उदारता नहीं होती, वह विकृत दिकाई देती है| (सहीह मुस्लिम:2594)

हदीस 101: "जिस व्यक्ति को नम्रता, कोमलता प्रदान की गयी हो, उसे भलाई भी प्राप्त होगी तथा जिस व्यक्ति को नम्रता, कोमलता प्रदान ना की गयी हो, उसे भलाई प्राप्त नहीं होगी|" (सुनन तिरमिज़ी: 2013, सहीह)

हदीस 102: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "ऐ आइशा! अल्लाह दयालु एवं उदार है, तथा चाहता है कि, लोग भी हर विषय में दया एवं उदारता का व्यवहार करे|" (सहीह बुखारी:6927)

हदीस 103: क्रूर तथा निर्दयी शासक अति बुरा संरक्षक है| (सहीह मुस्लिम:1830)

हदीस 104: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया कि, मुहम्मद ﷺ ने कहा, "एक व्यक्ति जा रहा था, उसे प्यास लगी तो वह एक कुंवे के पास गया और पानी पिया| (कुंवे के) बाहर आया तो देखा कि, एक कुत्ता प्यास के कारण, कीचड खा रहा था| उस व्यक्ति ने कहा, 'यह (कुत्ता) मेरी ही तरह (पानी की प्यास से) तड़प रहा है| तब वह व्यक्ति (कुंवे में जाकर), अपने जूते में पानी भरा, उसे अपने दन्त से पकड़कर बाहर आया और कुत्ते को पानी पिलाया| अल्लाह ने उसे (अच्छे कर्म के कारण) क्षमा कर दिया|" लोगो ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! क्या जानवर की सेवा करने से हमें अच्छा प्रतिफल प्राप्त होगा?" आप

ﷺ ने कहा, “हाँ, कोई भी जानवर की सेवा करने से अच्छा प्रतिफल प्राप्त होगा|” (सहीह बुखारी:2363)

हदीस 105: “धर्म बहुत आसान है, जो कोई उसे कष्ट में डाल ले, उस पर वह चल ना पायेगा| इसी लिए धर्म के विषय में अतिवाद ना करो, किन्तु परिपूर्णता से व्यवहार करो तथा अच्छे प्रतिफल की शुभ सोचना पाओ; तथा प्रभात एवं रात्री के समय (अल्लाह की) उपासना द्वारा शक्ति प्राप्त करो|” (सहीह बुखारी:39)

72. अल्लाह के रसूल ﷺ अपने बध्ध विरोधी पर भी दया करते थे

हदीस 106: आइशा रज़िअल्लाहुअन्ह ने उल्लेख किया: मैंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ से पूछा, “क्या आपने उहद के युध्ध से बढ़कर कठिन दिन का सामना किया है?” अल्लाह के रसूल ﷺ ने उत्तर दिया, “तुम्हारी जातियो ने मुझे बहुत कष्ट दिया, अख़बा का दिन बहुत कष्ट दाई था, उस दिन मैंने अपने आप को इब्न अब्द यलैल बिन अब्द कुलाल के हवाले किया, किन्तु उसने मेरे मांग को ठुकरा दिया| तो मैं वहा से निकल गया, बहुत दुःख के साथ, चलता गया, जब मैं खर्नात तालिब स्थान पर पहुंचा और सर को आकाश की ओर ऊपर किया तो देखा कि, अचानक बादल मुझ पर छा रहे है, तब मुझे शांति प्राप्त हुई| मैंने उसमे जिब्रईल को देखा| उन्होंने मुझे बुला कर कहा, ‘अल्लाह ने तुम्हारे लोग जो कहा उसे सुन लिया, उन लोगों ने क्या दिया उसे भी देख लिया, अल्लाह ने तुम्हारे लिए पर्वत के दूत को भेजा और कहा, तुम इन लोगो के विरुध्ध, जो चाहे आज्ञा दे सकते हो|’ पर्वत के दूत ने मुझे अभिवादन किया और कहा, “ऐ मुहम्मद! तुम जो चाहे आज्ञा दो|

यदि तुम चाहो तो मै अल अख शबैन (यह दो पर्वत) उन पर गिरा दूंगा|" अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "नहीं, मै आशा करता हूँ कि, इनकी संतान एक अल्लाह की ही उपासना करेंगे तथा उसके सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे|" (सहीह बुखारी:3231)

73. इस्लाम धर्म यह शिक्षा देता है कि, इस्लाम को लोगो तक उच्च तरीखे से, विवेचना पूर्वक पहुंचाये

हदीस 107: अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहुअन्हु ने उल्लेख किया: जब हम अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ मस्जिद में थे, एक देहाती अरब आया और मस्जिद में मूल विसर्जन करने लगा| अल्लाह के रसूल ﷺ के साथी (सहाबा) उसे रोकने लगे तो आप ﷺ ने कहा, उसे मत रोको; उसे छोड़ दो| उन्होंने उसे छोड़ दिया| जब उसका मूत्र विसर्जन हो गया तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने उसे बुलाया और कहा: यह मस्जिद का स्थान मल मूत्र विसर्जन के लिए नही, यह अल्लाह की उपासना ,आराधना, कुरआन का पाठ करने के लिए या अल्लाह के रसूल ने कुछ ऐसा ही कहा| वह (उल्लेखकर्ता) ने कहा (अल्लाह के रसूल ﷺ) ने किसी को एक बाल्टी पानी लाने की आगया दी, उसने पानी लाकर उस (मल) पर डाल दिया| (सहीह मुस्लिम:285)

हदीस 108: अनस ने उल्लेख किया कि, अल्लाह के रसूल ﷺ अपने पत्नियों के पास आये और पत्नियों के ऊँट वाहक, अन्जशा से कहा: अन्जशा, सावधान रहना, धीरे चलाना, तुम शीशों को लेकर जा रहे हो| (सहीह मुस्लिम:2323)

74. अल्लाह के रसूल ﷺ जानवर पर भी दया करते थे

हदीस 109: अब्दुल्लाह बिन जाफर ने कहा: “एक दिन अल्लाह के रसूल ﷺ ने मुझे अपने पीछे (सवारी पर) बिठाया और मुझे एक गुप्त बात बताई और कहा कि, मै उसे किसी को ना बताऊ| मल मूत्र विसर्जन के लिए आप ﷺ दो तरह के स्थान को पसंद करते थे, एक ऐसा स्थान जो ऊंचायी पर हो और दूसरा पेड़ों से घिरा हुआ स्थान| आप ﷺ एक बाघ में पहुंचे, जो एक अंसार सहाबी का था| अचानक वहां पर एक ऊँट आया और वह रोने की आवाज़ निकालने लगा और आँखों से आसूं बहने लगे| आप ﷺ ने उसके माथे पर हाथ रखा| वह ऊँट चुप हो गया| तब आप ﷺ ने कहा, “इस ऊँट का मालिक कौन है? यह ऊँट किसका है?” अंसार में से एक युवक आया और कहा, “अल्लाह के रसूल ﷺ यह मेरा है|” आप ﷺ ने कहा, “क्या तुम इस जानवर के विषय में अल्लाह ने डरते नहीं हो, जिसने इसे तुम्हारे हवाले (वश में) किया? इसने मुझसे तुम्हारी शिकायत की है कि, तुम इसे भूका रखते हो और इस पर अधिक बोझ डालते हो, जिससे यह बलहीन हो गया है|” (सुनन अबी दावूद:2549, सहीह)

हदीस 110: वास्तव में अल्लाह ने हर एक विषय में भलाई रखी है; इसलिए जब तुम मारते हो, तो अच्छे तरीखे (भली तरह) से मारो तथा जब तुम ज़ुबाह (पशु वध) करते हो तो, अच्छे तरीखे (भली तरह) से ज़ुबाह (वध) करो| इसलिए हर कोई ज़ुबाह करने से पहले अपनी छुरी को तेज़ करले, इससे जानवर को मरने में आसानी होती है| (सहीह मुस्लिम:1955)

हदीस 111: “एक स्त्री को आग (नरक) में डाला गया, उसने एक बिल्ली को बाँध कर रखा, न उसे खाना दिया, न उसे छोड़ दिया, ताके वह बाहर कुछ खाले|” (सहीह बुखारी:3318)

हदीस 112: अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, “एक कुत्ता कुंवे के पास फिर रहा था और प्यास के कारण मृत्यु के समीप था, उस समय एक इस्त्रायिली वेश्या (स्त्री) ने उसे देखा और अपने जूते से पानी भर कर उसे पिलाया| तो अल्लाह ने उसके उस भले कर्म के कारण उसे क्षमा कर दिया|” (सहीह बुखारी:3467)

75. अल्लाह के रसूल ﷺ पक्षियों के प्रति दयालु

हदीस 113: अब्दुल्लाह बिन मसूद ने उल्लेख किया: जब हम अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ एक यात्रा में थे तो आप ﷺ मूत्र विसर्जन के लिए गए, तब हमने एक पक्षी (चिड़िया) को देखा, उसके दो छोटे बच्चे थे, हमने उन बच्चों को ले लिया| तब वह चिड़िया अपने बच्चों को प्राप्त करने का प्रयास कर रही थी| उस समय आप ﷺ आये और कहा: “इसके बच्चों को लेकर किसने इसे बाधा पहुंचाया है? इसके बच्चे इसे वापस दे दो|” (सुनन अबी दावूद:5268, सहीह)

हदीस 114: इब्न उमर रज़िअल्लाहुअन्हु खुरैश के कुछ युवकों के पास से जा रहे थे, तो उन्होंने देखा के, वह युवक एक चिड़िया को बाँध कर, तीर से उस पर निशाना लगा रहे थे| उन लोगो के बीच यह समझौता हुआ था कि, जो भी तीर निशाना चूक जाती, वह उस चिड़िया के मालिक की हो जाती| जब उन लोगो ने इब्न उमर रज़िअल्लहुअन्हु को देखा, तो वहां से चले गए| इब्न उमर ने कहा: ऐसा किसने किया? इस तरह जानदार चीज़ को निशाना बनाने वाले पर अल्लाह और अल्लाह के रसूल ﷺ ने अभिशाप किया है| (सहीह मुस्लिम:1958)

76. अल्लाह के रसूल ﷺ पौधे पर भी दयालू थे

हदीस 115: जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने उल्लेख किया: अल्लाह के रसूल ﷺ एक (कोई भी) पेड या खजूर के पेड़ के पास खड़े होकर जुमा (शुक्रवार) के दिन का खुत्बा (प्रसंग) देते थे| एक अंसारी पुरुष या स्त्री ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! क्यों न हम आप के लिए एक मंच (मिम्बर) बनाये?" आप ﷺ ने उत्तर दिया, "यदि चाहते हो तो बना दो|" तो उन लोगों ने मंच बनाया और आप ﷺ [खुत्बा देने (प्रसंग करने) के लिए] उसकी ओर जाने लगे| तब वह खजूर के पेड़ से बच्चों जैसी रोने की आवाज़ आने लगी| मुहम्मद ﷺ मिम्बर से उतरे और उसे गले से लगा लिया| जिस तरह बच्चों को चुप कराया जाता है, उसी तरह उस पेड़ को चुप कराया गया| अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा, "इस पेड़ के रोने का कारण यह था कि, वह धर्म (दीन) के विषय सुना करता था, जो उसके पास से कहे जाते थे (उसे उसकी कमी दुखित कर रही है)|" (सहीह बुखारी:3584)

77. अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ ने अपने काल में शांति की स्थापना की तथा हर तरह की हिंसा को समाप्त किया

ARABIC TEXT

78. इस्लाम धर्म आतंकवाद के विरुध्ध है; इसका उदाहरण यह है कि, युध्ध के समय भी युध्ध से पूर्व किये गए समझौते पर कर्तव्य बध्ध रहने की शिक्षा देता है

कुरआन 97: और जब वह लौटता है तो धरती में इसलिए दौड़-धूप करता है कि इसमें बिगाड़ पैदा करे और खेती और नस्ल को तबाह करे, जबकि अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:205)

कुरआन 98: और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (कुरआन सूरह बखरह 2:190)

कुरआन 99: और यदि मुशरिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो तुम उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं, जिन्हें ज्ञान नहीं। (कुरआन सूरह तौबह 9:6)

कुरआन 100: और यदि वे संधि और सलामती की ओर झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह, वह सब कुछ सुनता, जानता है। (कुरआन सूरह अन्फाल 8:61)

हदीस 116: page 130